दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273009
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2019–20 दिनांक 07.05.2020

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

गोरखपुर 07 मई। ईश्वर के साथ जो स्वयं को नाथता है वही नाथ कहलता है। नाथ पंथ के सिद्ध संतों ने आमजन में शिवत्व का दर्शन करते हुए लोकहित को अपने साधना का केंद्रीय विषय बनाया। महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना के माध्यम से नाथ पंथ के उसी लोकहितकारी परंपरा को नई ऊंचाई प्रदान किया। जब जब देश पर संकट आया है न्यासियों तथा सन्यासियों की परंपरा ने उस संकट का समाधान किया है आज भारत ही नहीं पूरा विश्व एक महा संकट के दौर से गुजर रहा है इस संकट की घड़ी में पुनः आशा और विश्वास के केंद्र के रूप में इसी परंपरा के प्रतिनिधि गोरक्ष पीठाधीश्वर एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी आज कार्य करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

उक्त बातें दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर द्वारा आयोजित युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 126वी जयन्ती के अवसर पर, पर फेसबुक लाइव के माध्यम से सम्बोधित करते हुए जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के पूर्व कुलपति, प्रो0 हरिकेश सिंह ने कही। अध्यात्मिक परंपरा में जहॉ सनातन ऋषियों ने परलोक की सिद्धि के लिए हिमालय में साधना किया वही ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने सामाजिक समरसता, लोक कल्याण एवं लोक निर्माण के लिए विद्या एवं प्रज्ञा के माध्यम से साधना की। राज परिवार से चल कर सर्वसमाज के कल्याण के लिए उन्होंने नाथ परंपरा की अद्वितीय पीठ गोरखनाथ मंदिर को अपनी तपोभूमि बनायी। वे श्रेयस एवं प्रेयस दोनों धाराओं के साधक थे।

प्रो. सिंह ने आगे अपनी बात को बढ़ाते हुए महाराज जी के कथनों को इस प्रकार रेखांकित किया 'भाषा, जाति, प्रदेश और विघटनकारी प्रवृत्तियों की बढ़ती हुई दुश्चिंताओं का एक मात्र निदान हिन्दुत्व है। भारत के विभिन्न तीर्थस्थान, हमारे प्राचीन समाजिक मान्यताएं और सामान्य आचार संहिता हमारे हिन्दुत्व के व्यक्तिगत सिद्धान्त और धार्मिक ग्रंथों में प्रतिस्थापित अनुष्ठान – हमें एक राष्ट्र के रूप में एकत्र होने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है। हिन्दुत्व, साम्प्रदायकिता नहीं, राष्ट्रीयता है।' अपने समुचे जीवन को आध्यात्म के साथ ही साथ समाज सेवा के विभिन्न प्रकल्पों यथा शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक समरसता व चिकित्सा के साथ ही धर्म आधारित राजनीति के लिए समर्पित किया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के प्रसार के लिए

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की, जिसके अंतर्गत तीन दर्जन से ज्यादा संस्थायें शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने महाविद्यालय मे स्थित ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की प्रतिमा पर सभी संस्थाप्रमुखों की ओर से पुष्पान्जलि कर नमन किया। लाकडाउन के कारण सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थीयों ने अपने आवास पर ही ब्रह्मलीन महाराज जी को श्रद्धासुमन अर्पित किया।

पुष्पांजलि के पश्चात सिविल लाइन्स क्षेत्र में गुजरने वाले राहगीरों को कोविड सेल के प्रभारी डॉ परीक्षित सिंह तथा डॉ. कमलेश मौर्य द्वारा व छात्र परिषद द्वारा अभिगृहीत क्षेत्र रजही व उसके आस–पास के लोगों के बीच मास्क, हाथ धोने का साबुन एवं हर्बल सेनेटाइजर का निःशुल्क वितरण श्री सुरेन्द्र चौहान, श्री मिथिलेश यादव व नीरज पाण्डेय द्वारा किया गया।

ब्रह्मलीन दिग्विजय नाथ महाराज की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित साप्ताहिक फेसबुक लाइव व्याख्यानमाल के अंतर्गत 'धर्म एवं विज्ञान' विषय पर ईविंग क्रिश्चियन कालेज प्रयागराज के अर्थशास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ विवेक निगम का व्याख्यान दिनांक 08.05.2020, मध्यान 12.00 बजे से होगा।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी सूचना एवं जनसम्पर्क